डॉ० आशिस कुमार सिन्हा
पूर्व प्राध्यापक, बंगला विभाग
मधुपुर महाविद्यालय, मधुपुर
देवघर, झारखंड, भारत।

"मंथन" २

अपने को आँकने के लिये जब मै आईने के सामने
आता हूँ,
अपने को पहचान नही पाता हूँ।
एक-आध दिन नही-प्रायः मुझेसे, मेरी छाया से काया
की
शीत-युद्ध लगी ही रहती है।
आईने मुझे विचलित करता है, और बे-बाक मै अजीब
सा घुटन
अनुभव करता हूँ।
क्या आईने में अपना कायराना चहरा आपने कभी
नहीं देखा?

आईने में अपने को देखकर कभी हैरान नहीं हुये
आप?
नाखुश नहीं हुये आप, अपना खौफनाक चेहरा देख कर
?
अपने से भयभीत नही हुए कभी?
गला घोटने जैसी बिवशता आप पर कभी सवार नहीं
हुई ?
नहीं ?
मै आपको गलत तो नहीं कह सकता परंतु
आप निश्चित भूल रहे है-
गला तो हम प्रतिदिन घोट रहे है
अपने अरमानों का, सपनों का, भावनाओं का,
अनुभूतियों का-
अपने रेगिस्तानी दिल और मगरमच्छी प्रवृत्तियों को
लेकर
जब मै आइने के सामने आता हूँ,

अपने को डरावनों से भी ज्यादा डरावना पाता हूँ।

**** **** ****

स्वप्निल जिंदगी के मोड़ पर खड़ा
नित नये चाहतों से जख्मी मै
दिल के आइने मे जब अपने को देखता हूँ
मेरे रोमकूप रोमांचित हो उठते है-
मुझे वह खौफनाक मै नहीं,
एक भव्य पुरुष दिखाई देता है।

"CHURNING" - 2

When I come in front of the mirror to admire myself,
I fail to recognize myself,
Not just a day but perhaps at all times,
There is a cold-war between my reflection and my body.
The mirror upsets me and unnecessarily,
I go through a feeling of a strange pain.

Have you never seen your cowardly face in the mirror anytime?
Have you never felt astonished after seeing yourself in the mirror?
Have you not felt unhappy on seeing your frightening face?
Have you never been afraid of yourself?
Has the need to choke your neck never occurred to you?

I cannot say that you are wrong, but you definitely are mistaken-
We do choke our neck every day,
On our aspirations, our dreams, our emotions, our sensitivities.

Taking the vast deserted and the magnified crocodile heart of mine in front of the mirror,
I find myself much more frightening than the fearful.
Standing at the cross-roads of a dreamy life,
Wishing for something new every day, when I look into,
The mirror of my injured inner self,
My dreadful self becomes romantic and
I find in me not the frightful being,
But a divine gentleman……..

By
Dr. Ashish Kumar Sinha
Translated by
Mrs. RajaniInbavanan.